Cosmos Multidisciplinary Research E-Journal
Online Available at www.cmrj.in
Recognized International Peer Reviewed Journal
Impact Factor 4.94
ISSN No. 2456-1665

हिंदी साहित्य और अजंता गुफाए

प्रा.डॉ.तडवी सैराज अन्वर
संत ज्ञानेश्वर महाविद्यालय
सोयगांव जि.औरंगाबाद
मोबाईल क्रमांक - ९९७५३१३४३७
sairaj.tadvi@gmail.com

प्रास्ताविक :-

साहित्य समाज का दर्पण माना जाता है। मनुष्य के प्रगती के साथ ही साहित्यिक विधाओं में भी प्रगती होती रही है। साहित्य में संपूर्ण मानव का प्रतिबिंब प्रदर्शित किया जाता रहा है। भाषा मनुष्य को वरदान के रुप में प्राप्त है। भाषा के बीना मनुष्य के अस्मिता की पहचान सम्भव न होती। मनुष्य ने मूल्य, संस्कृति, का निर्माण किया है, इसके विकास में भाषा का अनन्य साधारण महत्व है। प्राचीन समय में जब भाषा का अस्तित्व नहीं होगा तब आदिमानव ने सोचने समझाने के लिए किसी न किसी प्राचीन अर्थ के रुप में उसके मस्तिक में रही होगी। भाषा शब्द संस्कृत के 'भाष्' धातू से हुई है। भाषा ने मनुष्य की एक अलग पहचान बनाई है। भाषा समाज, संस्कृति की वाहक होती है। भाषा माध्यम से ही साहित्य के व्दारा मानव समाज की संस्कृति को भली-भाँति समजा जा सकता है। भाषा का आरम्भ मौखिक या उच्चारित रुप में हुआ। आदिमानव के शैलचित्रों के बाद चित्रलिपी थी, जो वस्तुओं के प्रतिक थे। भाषा मानव समाज के आंतरिक भेदों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। मनुष्य के आकार-प्रकार में निरंतर परिवर्तन होता रहा है। भाषा भी प्राचीन समय से परिवर्तन शिल रही है। भाषा पर भौगोलिक ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक प्रभाव होता है। भाषा कैसे निर्मित हुई? इसका विकास कै हुआ? इसके संबंध में अनेक मतमतांतरण है। लेकिन भाषा के व्दारा साहित्य में मनुष्य का प्रतिबिंब प्रस्तुत करने का कार्य भाषा सदा करती रही है। हिंदी भाषा का विकास अपभ्रंश भाषा से हुआ है। हिंदी भाषा के निर्माण के संबंध में भी विवाद है, लेकिन १००० ई.स. आसपास हिंदी भाषा का विकास हुआ ऐसा माना जाता है। प्रारंभ में साहित्य लेखन में शिलालेख ताम्रपट आदि का प्रयोग होता रहा, लेखन सामग्री तथा लिपि के विकास के साथ साहित्य लेखन परम्परा का निरंतर विकास होता रहा। प्राचीन समय में मानव व्दारा निर्मित किए गये किले, गुफाए, दरगाह, स्तुप, ऐतिहासिक स्थलों का और साहित्य का अतुट संबंध रहा है। जिसमें मानव की संस्कृति, मूल्य, परम्पराए, सामाजिक, ऐतिहासिकता की पहचान होती है।

अजंता गुफाए :-

अजंता गुफाए विश्व धरोहर के रुप में अजंता गांव के पास है इसका निर्माण २०० ई.पूर्व से ६५० ईस्वी के मध्य हुआ था। सातवाहन, वाकाटक, चालुक्य शासन के समय इनका निर्माण हुआ। अजंता की गुफाए २००० साल पुरानी है और बुध्द का पुतला ६०० साल पुराना है। जॉन स्मिथ व्दारा १८१९ को अजंता की गुफाओं को खोज निकाला गया। अजंता की गुफाओं में वस्तुकला, चित्रकला, शिल्पकला के उत्कृष्टतम उदाहरण है। इन गुफाओं में भगवान बुध्द से संबंधित ५५० से अधिक जातक कथाएं है जिनमें भगवान बुध्द के जीवन से संबंधीत विविध घटनाक्रमों को चित्रकला, शिल्पकला के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। अजंता गुफाओं के निर्माण में टेम्पेरा,

फेस्को, तकनीक के साथ बनाया गया है। सन १९८३ से युनेस्को विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया है। अजंता में कुल तीस गुफाए है यह गुफाए चैत्रीगृह (स्तूप हॉल) और विहार (आवास हॉल) में विभाजित किया गया है।

हिंदी साहित्य और अजंता गुफाए :-

हिंदी साहित्य में अनेक विधाए है। मनुष्य ने भाषा के विकास को चित्रलिपि, भाव-संकेत लिपि, वर्णनात्मक लिपि, इस प्रकार से किया है। हिंदी शब्द फारसी भाषा की देन है। फारसी में 'स' का उच्चारण 'ह' होता है। इस आधार पर सिंध से फारसी में 'हिन्द' बनता है। मध्यकालीन कवियों ने भाषा को 'भाखा' नाम प्रदान किया था। हिंदी के लिए हिंदुस्थानी दक्खिनी हिंदी, रेख्ती हिंदी, उर्दू आदि नामों का प्रयोग भी होता रहा है। हिंदी भाषा का संबंध अजंता की गुफाओं में गुफा नं.१ में रहा है, जिसमें फारसी राजदूत का चित्र जो फारसी व्यापार के बारे में चर्चा करते हुए दिखाए गये है डॉ.देवेन्द्र शुक्ल ने कहा है "अरबी एवं फारसी साहित्य में हिंदी में बोली जानेवाली भाषाओं के लिए जबान-ए-हिंदी, हिंदी जुबान अथवा हिंदी का प्रयोग दिल्ली-आगरा के चारों ओर बोली जानेवाली भाषा के अर्थ में किया।" १ हिंदी भाषा का संबंध फारसी भाषा से रहा है। हिंदी के प्रथम कवी मुल्लादाऊद को माना जाता है जिन्होने हिंदी में हिंदू संस्कृति को प्रचलित प्रेम कहानियों को अपने काव्य का विषय बनाया इससे अजंता की गुफाए और हिंदी साहित्य का संबंध प्राचीन समय से रहा है, यह सिध्द होता है।

खाजा अहमद अब्बास व्दारा हिंदी साहित्य में १६४६ को 'अजंता की ओर' इस किताब को हिंदी में लिखा गया है। जब हिंदी भाषा का विकास हो रहा था, तब हिंदी भाषा में अजंता विश्व धरोहर का चित्रण को लेकर इस पुस्तक का निर्माण किया गया था। "यह देखिए महात्मा बुध्द घोडे पर चढे बाजार में से गुजर रहे है। चेहरे पर कितनी शान्ति है।... और यह देखिए। ये स्त्रिया अपने-अपने झरोखेसे कितनी श्रध्दा भक्तिपूर्ण निगाहोंसे देख रही है।" २

भगवतशहरण उपाध्याय व्दारा 'अजंता' (गदय खंड) का निर्माण किया गया है। इसमें गुफा नं.११ का बहुत सुंदरता से चित्रण किया गया है। नारी के विविध रुप चित्रण, भाव मुद्राए श्रृंगार, का चित्रण उपाध्याय व्दारा किया गया है। गुफा नं. ११ में बौध्द धर्म से संबंधीत हीनयान और महायान को दर्शया गया है। हीनयान तथा महायान कनिष्क शासनकाल में बौध्द धर्म दो प्रमुख सम्प्रदायों में विभाजित हो गया हीनयान और महायान सम्प्रदाय के लोग अपन को मूल बौध्द धर्म का संरक्षक मानते है। और उसमें किसी प्रकार से परिवर्तन स्विकार नही है, दूसरी ओर महायान सम्प्रदाय के लोग बौध्द धर्म के सुधार स्वरूप को मानते है। हिंदी साहित्य के इतिहास में हीनयान और महायान सम्प्रदाय को विस्तृत रुप में चित्रित किया गया है।

मोहन राकमेश ने 'लहरों के राजहंस' इस नाटक की रचना का १९६३ निर्माण अजंता की गुफाओं से बुध्द के जीवन से संबंधीत है। राकेश जी ने बुध्द 'लहरों के राजहंस' में एक ऐसे कथानक का निर्माण किया है जो नाटकीय पुनराख्यान है जिसमें सांसारिक सुख, अध्यात्मिक शांती के पारम्पारिक विरोध का व्दंव्द है। अनिश्चित, अस्थिर और संशयी मनवाले नंन्द की यही चुनाव की यातना ही इस नाटक का कथा बीज और केंन्द्र बिन्दु है। नंन्द एक ओर गौतम बुध्द से प्रभावित होकर भिक्षू बनना चाहते है दूसरी ओर अपनी पत्नी सुन्दरी पर भी अनुरुक्त है। इसके साथ ही बुध्द के जीवन संबंधीत अनेक जातक कथाओं को हिंदी साहित्य में चित्रित किया

गया है, शेर की खाल में गधा, मुर्गा और बिल्ली, मूर्ख डरपोक खरगोश, शियार और कौआ, शेर और कठफोडन, सुअर से ईर्ष्या करनेवाला बैल, स्वर्णिम पंखों वाला हंस, राजा शिबि, कछुआ जो मोन न रह सका, ऐसे अनेक जातक कथाओं का निर्माण अजंता की गुफाओं को लेकर किया गया।

हिंदी साहित्य के इतिहास में भक्ति में सगुणधारा तथा निर्गुणधारा परम्परा को प्रस्तुत किया गया है। अजंता की गुफाओं में भी भगवान बुध्द व्दारा भक्ति की परम्परा रखी गयी है। बुध्द को भक्ति भावना को चित्रकला, मूर्तीकला व्दारा प्रस्तुत किया गया है। हिंदी साहित्य में भक्ति परम्परा की राजश्रित कवियों ने चारण नीति, श्रृंगार, शौर्य, पराक्रम आदि का वर्णन हिंदी साहित्य में वैदिक काल से शुरु होता है। रामचंद्र मिश्र ने लिखा है "धार्मिक क्षेत्र अस्तव्यस्त थे इन दिनों उत्तर भारत के अनेक भागों में बौध्द धर्म का प्रचार था। बौध्द धर्म का विकास कई रुपों में हुआ जिनमें से एक वज्रयान कहलाया, वज्रयानी तांत्रिक थे और सिध्द कहलाते थे।" ३ बौध्द धर्म सम्प्रदाय व्दारा निर्मित धर्म परम्परा को हिंदी साहित्य लिखित रुप में प्रस्तुत किया गया है।

निष्कर्ष :-

निष्कर्ष रुप में कह सकते है कि, हिंदी भाषा साहित्य के विकास में अजंता की गुफाओं का योगदान तथा संबंध रहा है, जिसके कारण बौध्द धर्म, बुध्द जीवन, भक्ति परम्परा, हीनयान, महायान सुफी धर्म परम्परा, बुध्द तत्वज्ञान, नारी के विविध रुप को लेकर हिंदी में साहित्य लिखा गया। अजंता की गुफाए जो चित्र, मुर्ती, वस्तु रुप में स्थित है हिंदी साहित्य में भाषा के व्दारा इसका विकास हुआ है।

संदर्भ ग्रंथ :-

१) हिंदी भाषा विज्ञान - डॉ.देवेन्द्र शुक्ल - १०

२) अजंता की और इ खाजा अहमद अब्बास - ०९

३) बौध्द सिध्दो की तंत्र साधना और चर्यापद - डॉ.रामचंद्र मिश्र

४) लहरों के राजहंस - मोहन राकेश

५) अजंता (उपाध्याय-६) - डॉ.भगवतशरण उपाध्याय

६) हिंदी साहित्य का इतिहास - रामचंन्द्र शुक्ल

७) AT Ajanta = Kanaiyalal H. Vakil.